ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना

डॉ आभा सिंह

असोसिएट प्रोफेसर एवं प्रमुख हिन्दी विभाग

वी एम वी कॉलेज वर्धमान नगर,नागपूर

प्रस्तावना-

साहित्य और पर्यावरण दो भिन्न उपयोग वाले शब्द होने के बाद भी कहीं ना कहीं अपने अंतरसंबंधों को जीते है। जहां एक ओर साहित्य मानवीय भावनाओं और मूल्यों का पोषक और संवाहक है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण का आशय उस बाहरी परिवेश से है जो मानव अपने आस पास देखता है,तैयार करता है। साहित्य और पर्यावरण मनुष्य के बाहरी और भीतरी दोनों परिवेश के लिए आवश्यक है। हिन्दी में साहित्यगत चेतना ने हमेशा ही जिस चेतना को सर्वोपरि माना है वह है मनुष्य की पर्यावरणीय चेतना।हिन्दी के कवि या लेखक ने पर्यावरण के ऐसे किसी भी घटक को अनदेखा नहीं होने दिया जो मूल्यवान हो। फिर चाहे वह नदी,झरने,तालाब हो या पेड़,पौधे,जल,जंगल,आकाश या धरती ही क्यों ना हो। इतना ही नहीं तो साहित्यकार ने अपनी कलम की हद में पशु पक्षियों और अन्य जीवों को भी लिया है। एक दृष्टि यह भी कहती है कि मनुष्य ने प्रकृति और पर्यावरण में अंतर नहीं किया है। साहित्यिक जगत ने वही किया जो मनुष्य युगों युगों से करता आ रहा है। महाकवि प्रसाद ने तो इस प्रकृति को मानवसम मानकर उसका मनुष्य से संबंध स्थापित किया। केवल प्रसाद ही नहीं तो प्रारंभ से ही कवियों ने कथाकारों ने हर उस विधा को अपना माध्यम बनाया जो संदेश देने में सक्षम हो। यह गैरतलब नहीं है कि साहित्य की हर विधा ने सक्षमता से प्रकृति की बात कही है। यह प्रशंसनीय भी है कि साहित्य के माध्यम से मनुष्य के जीवन में पर्यावरण के महत्व को निर्दिष्ट किया जाता रहा है। मिट्टी,जल,वायु,आकाश और अग्नि से बनी इस देह को प्रकृति के संरक्षण की आवश्यकता होती है और प्रकृति को मनुष्य की संवेदनशिलता की। हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हमेशा ही प्रकृति को विशेष स्थान दिया है। पर्यावरण चेतना की यह समृद्ध परंपरा हमेशा ही हमारे लिए प्रासंगिक रही है। यह कहना अनुचित नहीं है कि पर्यावरण है तो मनुष्य है। मनुष्य है तो पर्यावरण है। पर्यावरण और मनुष्य परस्पर पूरक है।

बात अगर मनुष्य की करे तो उसने अपनी रक्षा के लिए बहुतेरे भले बुरे परिवर्तन किए है और कर भी रहा है। उसने कोशिश की कि वह प्रकृति को समझे,उसके रहस्यों को समझे। मनुष्य ने यह जान लिया कि प्रकृति की शक्ति उसके सामर्थ्य से बड़ी है। प्रकृति के प्रति समर्पण गीत लिखना उसने तब से ही शुरू किया।मानव ने इन वंदना गीतो के माध्यम से प्रकृति से एक सहज संबंध बनाया। रामायण महाभारत से लेकर संस्कृत के प्राचीन काव्य,वेद पुराण आदि सभी में मनुष्य का प्रकृति के प्रति समर्पण और प्रेम दिखाई देता है। 'आदिकालीन वीरकाव्यात्मक रचनाओं में प्रकृति का वर्णन वीरकाव्य की पृष्टभूमि के अनुरूप हुआ है। साथ ही एक दूसरा बड़ा क्षेत्र जीवन की क्षणभंगुरता को दिखाने के लिए प्रकृति को उपदेशक की तरह पेश करता है।'1

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

हिन्दी साहित्य के हर काल में पर्यावरण चेतना के सिद्धांत दिखाई देते है। आदिकाल में विद्यापति कि पदावली में प्रकृति वर्णन के दृश्य अद्वितीय है। यथा- मौली रसाल मुकुल भेल ताब

समुखही कोकिल पंचम गाय। 2

भक्तिकालीन कवियों में कबीर,सूर,तुलसी,जायसी ,रहीम सभी के पदों में पर्यावरण के विषय में चेतना दिखाई देती है। कबीर ने जहां एक ओर जल का संबंध मनुष्य के जीवन से किया वहीं उन्होने विविध उदाहरणों में धरती आकाश,तारामंडल से लेकर दिन रात की गतिविधियों को उल्लेखित किया है। यूं भी भारतीय संस्कृति में प्रकृति हमेशा से पूजनीय रही है और शक्तिशाली भी। प्रसाद जी ने कामायनी में प्रकृति के शक्तिशाली रूप को चित्रित करते हुए लिखा- 'प्रकृति रही दुर्जेय,पराजित हम सब थे मद में।

भोले थे, हाँ तिरते केवल सब विलासिता के मद में।

वे सब डूबे-डूबा उनका वैभव,बन गया पारवार,

उमड़ रहा था देव सुखो पर दुख जलधी का नाद अपार।3

कामायनी हिन्दी साहित्य का वह महाकाव्य है जिसमे यह स्पष्ट संकेत कवि ने दिए है कि मनुष्य यदि संतुलन के महत्व को गंभीरता से नहीं लेगा तो उसे मानव जीवन के चिन्हों को मिटते देखने का भी अवसर नहीं मिलेगा।

प्रसाद जी के साथ ही यह चेतना सुमित्रानंदन के काव्य में भी दिखाई देती। पंत हमेशा प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में जाने गए। मानव सभ्यता के विकास से लेकर अब तक प्रकृति मनुष्य के साथ चलती आ रही है। पंत की कविताओं में प्रकृति चेतना का सामर्थ्य बहुत बड़ा हो जाता है। पंत स्पष्ट रूप से कहते भी है कि-'कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले मुझे प्रकृति निरीक्षण से मिली है,जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्माञ्चल प्रदेश को है। प्रकृति के साहचर्य ने जहां एक ओर मुझे सौंदर्य,स्वप्न और कल्पना जीवी बनाया हैं वहीं दूसरी ओर जनभीरू भी बना दिया।'4

छायावाद के अन्य कवियों ने इस परंपरा को कायम रखा। निराला के काव्य में प्रकृति कभी जड़ नहीं रही। सजीवता के साथ वह चलती रही। निराला ने प्रकृति को डॉ दृष्टिकोणों से देखा,एक-मानवीकरण और दूसरा-रहस्यदर्शन। शेफालिका,वन बेला,मैं और तुम तथा नर्गिस आदि कविताओं में प्रकृति की रहस्य चेतना दिखाई देती है। 'वन कुसुमों की शैय्या'कविता में शरद और शिशिर ऋतुओं को कवि डॉ बहनों की तरह देखते हैं। निराला का प्रकृति चित्रण सौम्य और रौद्र दोनों रूपों को चित्रित करता है।

छायावाद के उपरांत प्रगतिवाद ने भी इस चेतना दृष्टि को प्रमुखता से देख। इन कवियों ने ग्राम्य प्रकृति को प्रधानता दी। नागार्जुन की कविताओं में गाँव की मिट्टी,मिट्टी की महक,महुए की खुशबू,ग्राम गीत,तालाब,पोखर सब मुखर होकर सुनाई देते हैं। प्रगतिवादी कवि ने किसान के जीवन को केंद्र में रखा और किसान के जीवन के केंद्र में होती है वर्षा और बादल। त्रिलोचन की कविताओं में यही स्वर सुनाई देता है जिस पर ल्ललन राय लिखते

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

हैं कि,'त्रिलोचन की कविता मानव मुक्ति के प्रश्नों से जुड़ जाती है,यही नहीं वरन प्रकृति और प्राकृतिक स्थितियों पर लिखी हुई कविताओं में भी मानवीयता के स्पर्श मिलते है।' 5-

पद्य ही नहीं तो गद्य साहित्य भी समय के साथ चलते साहित्य में प्रमुखता से खड़ा होता है। कहानी 'खोखाबाबू का प्रत्यावर्तन ' में लेखक भली भांति नदी के उस रूप का चित्रण करते है जो उसके क्रुद्ध स्वरूप को बताता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कुंआनों नदी मनुष्य के आधुनिकीकरण की जिजीविषा और प्रकृती के औदात्य को वर्णित करती है।

पर्यावरण का यह गुणधर्म है कि यदि उसके मध्य दखलंदाजी ना की जाए तो वह निरंतर जीवन का सहारा बन सकता है। समकालीन दौर में पर्यावरण विमर्श एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में देखा गया है। सभी जानते है की आज पर्यावरण यह असंतुलन की समस्या से जूझ रहा है। हिन्दी साहित्य की दर्शनवादी दृष्टि इस चेतना की संवाहक बनी की 'मनुष्य आज नहीं चेता तो कभी नहीं चेत पाएगा। ख्यातनाम पर्यावरविद अनुपम मिश्र की किताब आज भी खरे है तालाब वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है। साहित्य मनुष्य को सिखाता है कि पर्यावरण का क्या महत्व है। वह पर्यावरण को नष्ट करके स्वयं को स्थापित नहीं कर सकता।

आधुनिक हिन्दी साहित्य पर्यावरण के प्रधान घटक वनों और नदियों पर ध्यान केन्द्रित करता है। आज विकास के नाम पर जिस तरह धड़ल्ले से पेड़ काटे जा रहे हैं उसे देख कवि नरेश मेहता लिखते हैं कि-

मैं गुजर रहा था

अपने चीर परिचित मैदान से।

एका एक चीख सुनी

जो मेरे प्रिय पेड़ कि थी

कुछ लोग खड़े थे

बड़ी बड़ी कुल्हाड़ियाँ लिए

वे काट चुके थे इसके हाथ

अब पाँव काटने वाले थे

हम लोग लाश उठा रहें हैं

अंतिम संस्कार भी कर देंगे

तू राख़ ले जाना।' 6-

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

मनुष्य ने नदी पहाड़ों को अपने आराध्य के रूप में स्थापित किया परंतु वर्तमान समय में मनुष्य स्वार्थ साधना में व्यस्त है। मनुष्य के स्वार्थ के कारण नदियां कलुषित हो गई है और जल पर निर्भर मनुष्य के लिए घातक हो गई है। इसे पर्यावरणविद पंकज चतुर्वेदी इसे स्पष्ट करते हुए कहते है कि ,'कैसी विडंबना है कि जिस देश का समाज,सभ्यता ,संस्कृति,पर्व,जीविकोपार्जन,संस्कार,सभी कुछ नदियों के तट पर विकसित हुए और उसी पर निर्भर रहे है, वहाँ की हर छोटी बड़ी नदी अब कूड़ा ढ़ोने का वाहक बनकर रह गई है।'7

सपष्ट है कि साहित्य ने जिस प्रकृति और पर्यावरण को कर्म कांड के जरिए संरक्षित किया था वही समय की बली चढ़ती गई। प्रकृति की चेतना को समझते हुए पर्यावरण के इस विमर्श को भी समझना होगा कि जनसंख्या जा पर्यावरण की अधिकतम वहन क्षमता से अधिक हो जाती है तब पर्यावरण का असंतुलन शुरू होता है। साहित्य पर्यावरण की छोटी से छोटी गतिविधियों को भी स्वंय में समाहित करता है। वर्तमान में जहां हर ओर पारिस्थितिकी असंतुलन बढ़ रहा है वहीं मानव जीवन में भी विसंगतियाँ बढ़ती जा रही है। बढ़ता शहरीकरण जंगलो को कम करता जा रहा है। जंगलों के कम होने का सीधा असर पड़ता है मौसम पर। जंगलों के कम होने से वर्षा कम होती है और वर्षा के कम होने से धरती का भूजल प्रभावित होता है। हरे भरे जंगलों के बदले खड़े किए गए कौंक्रिट के जंगल कम होते पीने के पानी का जलस्तर नहीं बढ़ा सकते।

पर्यावरणविद चेताते हुए कहते हैं कि,'जब चौड़ी सड़कें,गगनचुंबी इमारतेऔर भव्य प्रासाद किसी क्षेत्र के विकास का एकमात्र पैमाना बन जाएँ तो जाहीर है इसका खामियाजा वहाँ की जमीन,जल और जन को ही उठाना पड़ेगा। निर्माण कार्य से जुड़ी प्राकृतिक संपदा का गैर कानूनी खनन खासकर पहाड़ो से पत्थर और नदी से बालू अब हर राज्य की राजनीति का हिस्सा बन गया है। पर्यावरण के मसले पर हर सरकार केवल आरोप प्रत्यारोप के द्वारा ही अपने दायित्व का निर्वहन कर लेते हैं। वास्तविकता तो यह है कि प्रकृति और जीवन में सामंजस्य बनाकर ही हम पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते है। मानव के बचे रहने के लिए जरूरी है कि पर्यावरण और प्रकृति बची रहे। वन्य जीवन और प्राकृतिक संपदा को बचाना ही मानव जीवन का संरक्षण होगा।

हमें विकास की अनिवार्यता को नियंत्रित करना होगा और उस समय को भी याद रखना होगा जब सिंधु नदी की घाटी की खुदाई हुई और मोहन जोदड़ों नामक एक पूरा शहर मिला। मोहन जोदड़ों एक ऐसा शहर जो यह बताता है कि हमारे पूर्वज कितने सुसंस्कृत और सभ्य थे। नदियों से उनका जीवन प्राण का रिश्ता था। नदियों के किनारे ही मानव समाज विकसित हुआ। बस्ती,खेती,मिट्टी व अनाज का प्रयोग ,अग्नि के इस्तेमाल के खोज हुए। मंदिर आदि नदी किनारे बने। यही वो नदियां थी जो ज्ञान और अध्यात्म का पाठ अपने प्रवाह से प्रहावित करती रही। भारत कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सोच कि संवाहक ये नदियाँ ही थी। पर्यावरणविद अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि,'इंसान मशीनों की खोज करता रहा,अपनी सुख सुविधाओं व कम समय में ज्यादा काम की जुगत तलाशता रहा और इसी आपाधापी में सरस्वती जैसी नदी गुम हो गई। गंगा व यमुना पर अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया। बीते चार दशकों के दौरान समाज व सरकार ने नई परभाषाएँ, मापदंड,योजनाएँ गढ़ी ताकि नदियों को बचाया जाए,लेकिन विडंबना है कि उतनी ही तेजी से पावनता और पानी नदियों से लुप्त हो गया।'8-वहीं

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

पर्यावरण कि समस्या अब अंतर्राष्ट्रीय समस्या हो गई है और यह भी सही है कि प्रकृति चित्रण और पर्यावरण दोनों अलग अलग है। साहित्य के संस्कार हमेशा ही प्रकृति के हर पक्ष का रूप चित्रण किया है । भूमंडलीकरण का परिणाम यह हुआ देशो की आपसी स्पर्धा,आर्थिक उन्नति के कारण व्यक्ति ने मानवता और मानवीय गुणो को दुय्यम कर दिया।इस संदर्भ में आदिवासी साहित्य आज भी जल और जंगल के लिए जद्दोजहद कर रहा है। कवियत्री निर्मला पुत्तल ने अपनी कविताओं में जंगलों की अवैध कटाई,जल के स्त्रोत सुख जाने पर गहरी चिंता जताई है।

निष्कर्ष-

आज के बढ़ते तकनीकी एवं औद्योगीकरण के समय में पर्यावरण की बढ़ती समस्या को त्रिलोचन,अरुण कमल,रामदरश मिश्र ,केदारनाथ सिंह,अशोक बाजपेयी ने अपनी कविता में बखूबी चित्रित किया। साहित्य ने जिस संवेदनशीलता से प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूकता की है वह महत्वपूर्ण है परंतु आज आवश्यकता यह है कि साहित्य की इस चेतना को ,पर्यावरण को सामाजिक विमर्श का माध्यम बनाया जाय। पर्यावरण विमर्श को अब जनचेतना और जन आंदोलन की,जनाधार की आवश्यकता है। समय के साथ मनुष्य की जरूरतों का बढ़ना सामान्य है परंतु जिस मनुष्य के मद्देनजर यह सब औद्योगिक और तकनीकी विकास हो रहा है जब वह ही नहीं बजेगा तो क्या होगा सुविधाओं का और सुविधाभोग का! आदिकाल से होता आया प्रकृति चिंतन आधुनिक काल में पर्यावरण विमर्श की ओर ना केवल ध्यान प्रमुखता से आकर्षित करता है बल्कि दायित्वबोध भी कराता है।

संदर्भ-

1- वन्य जीव एवं जैव विविधता- आलेख- सुधा सिंह

2- विद्यापति पदावली

3- कामायनी- जयशंकर प्रसाद

4- कविवर सुमित्रानंदन पंत और उनका रेशिमबंध –डॉ कृष्णदेव शर्मा

5- हिन्दी की प्रगतिशील कविता- कृष्णकांत

6- नरेश अग्रवाल,माध्यम सहस्त्राद्वी अंक 9 पृ क्र 80, संपादक डॉ सत्यप्रकाश मिश्रा

7- मझधार में धार- पंकज चतुर्वेदी

8- वहीं